जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

6 मार्च, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने "स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों की पुनर्कल्पना" पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के पूर्वोत्तर अध्ययन एवं नीति अनुसंधान केंद्र (सीएनईएसपीआर) ने आईसीएसएसआर के सहयोग से 5-6 मार्च, 2025 को "स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों की पुनर्कल्पना" पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन किया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता जामिया मिल्लिया इस्लामिया के माननीय कुलपति प्रो मजहर आसिफ ने की, जिन्होंने तेजी से आधुनिकीकरण के युग में स्वदेशी ज्ञान को संरक्षित करने में 'मातृभाषा' के महत्व पर जोर दिया। पूर्वोत्तर क्षेत्र में उनकी गहन विद्वता के साथ-साथ मणिपुरी और असमिया जैसी पूर्वोत्तर की भाषाओं में उनके प्रमुख अनुवाद अपने आप में एक संपत्ति हैं।

अपने स्वागत भाषण में पूर्वोत्तर अध्ययन एवं नीति अनुसंधान केंद्र की मानद निदेशक और संगोष्ठी की संयोजक प्रो मनीषा त्रिपाठी पांडे ने समकालीन वैश्विक चुनौतियों से निपटने में स्वदेशी ज्ञान की बढ़ती प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि किस तरह से भारतीय ज्ञान प्रणाली पूर्वोत्तर के स्वदेशी समुदायों के लिए एक आधार और जीवन की दुनिया रही है और इसे संरक्षित और बढ़ावा देना इस क्षेत्र में जैव विविधता, सांस्कृतिक विविधता और सतत विकास को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

विशेष अतिथि प्रो मोहम्मद मुस्लिम खान, पूर्वोत्तर अध्ययन एवं नीति अनुसंधान केंद्र में सामाजिक विज्ञान संकाय के डीन ने बुजुर्गों और पूर्वजों के ज्ञान के साथ युवा पीढ़ी के बढ़ते अलगाव और विषय की प्रासंगिकता के बारे में बात की।

इसके बाद प्रतिष्ठित मुख्य वक्ता, प्रो भगत ओइनम का परिचय पेश किया गया। प्रो ओइनम ने स्वदेशी संस्कृतियों, विशेष रूप से पूर्वोत्तर भारत में अध्ययन करने के पश्चिमी दृष्टिकोण की आलोचना की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि "स्वदेशी" में गैर-पश्चिमी या गैर-आधुनिक कुछ भी शामिल होना चाहिए, जो पारंपरिक शैक्षणिक वर्गीकरण को चुनौती देता है। क्षेत्र के उदाहरणों का उपयोग करते हुए, उन्होंने दिखाया कि कैसे स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ समाज और संस्कृति को समझने के लिए वैकल्पिक ढाँचे प्रदान कर सकती हैं। उन्होंने ब्रिटिश आगमन से पहले पूर्वोत्तर भारत को "तबुला रासा" के रूप में देखने के खिलाफ चेतावनी दी, यह देखते हुए कि ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने समुदाय और सहिष्णुता जैसे आदिवासी मूल्यों को अस्पष्ट कर दिया। अंत में, उन्होंने स्वदेशी ज्ञान का अध्ययन करने के लिए एक व्याख्यात्मक दृष्टिकोण की वकालत की, व्यक्तिगत व्याख्या पर जोर दिया और स्वदेशी संस्कृतियों को उनकी अपनी शर्तों पर समझने के पक्ष में कठोर पश्चिमी ढाँचों से परहेज किया। सेमिनार के सहायक प्रोफेसर और सह-संयोजक डॉ. के. कोखो ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

सेमिनार में दो दिनों में छह शैक्षणिक सत्र शामिल थे। पहले दिन प्रोफेसर एम. अमरजीत सिंह की अध्यक्षता में "स्वदेशी ज्ञान प्रणाली पर परिप्रेक्ष्य", प्रोफेसर कोमोल सिंहा की अध्यक्षता में "स्वदेशी सामाजिक और शासन प्रणाली" और डॉ. गोमती बोदरा हेम्ब्रोम की अध्यक्षता में "स्वदेशी ज्ञान प्रणाली और लिंग" पर सत्र शामिल थे।

सेमिनार के पहले दिन का समापन नेहरू गेस्ट हाउस में सीएनईएसपीआर द्वारा आयोजित 'इफ्तार' पार्टी के साथ हुआ, जो रमजान के पवित्र महीने के उत्सव को चिह्नित करता है। अनौपचारिक सभा ने प्रतिभागियों को नेटवर्क बनाने और अपने शोध पर चर्चा करने का अवसर भी प्रदान किया।

दूसरे दिन प्रोफेसर शफीक अहमद की अध्यक्षता में "पर्यावरण संरक्षण और न्याय", प्रोफेसर अर्चना दासी की अध्यक्षता में "स्वदेशी पारिस्थितिक अभ्यास" और डॉ. नेमथियानगई गुइटे की अध्यक्षता में "स्वास्थ्य और उपचार" पर सत्र आयोजित किए गए। प्रतिष्ठित प्रस्तुतकर्ताओं ने समकालीन चुनौतियों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थों के साथ एक वैध ज्ञानमीमांसा ढांचे के रूप में स्वदेशी ज्ञान को मान्यता देने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

संगोष्ठी विविध विचारों और विचारों के साथ ज्ञानवर्धक और व्यावहारिक थी, जिसने दर्शकों को बौद्धिक समृद्धि का वादा किया। सेमिनार का समापन जेएमआई के रजिस्ट्रार प्रोफेसर मोहम्मद महताब आलम रिजवी की अध्यक्षता में समापन सत्र और जेएनयू के पूर्वोत्तर भारत के अध्ययन के विशेष केंद्र के प्रोफेसर विमल खवास के समापन भाषण के साथ सफलतापूर्वक हुआ। प्रोफेसर रिजवी ने स्थानीय भाषा के महत्व और आधुनिकता के साथ प्राचीन विचारों और परंपराओं को संबंधपरक शब्दों में समझने के महत्व के बारे में बात की। प्रो. खवास ने अपने समापन भाषण में विषय की जटिलता को पहचाना और "स्वदेशी" की अवधारणा को समस्याग्रस्त बनाने के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने सेंडाई फ्रेमवर्क पर जोर दिया और उत्तर पूर्व भारत में आपदा जोखिम न्यूनीकरण के संबंध में स्वदेशी ज्ञान के क्षेत्र में निरंतर साहित्यिक अंतराल पर प्रकाश डाला।

प्रो. मनीषा टी. पांडे ने समापन टिप्पणी की और इस बात पर जोर दिया कि विद्वानों को इन प्रणालियों को विदेशी या बिना आलोचना के प्रशंसा करने से बचना चाहिए। प्रो. पांडे ने प्रो. भगत ओइनम से प्रेरणा लेते हुए मौखिक परंपराओं की पुनर्प्राप्ति और दस्तावेज़ीकरण पर जोर दिया। उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आईसीएसएसआर और सभी संकाय सदस्यों, प्रो. एम. अमरजीत सिंह, डॉ. कोखो और शिल्पी फुकन, विद्वानों और कार्यालय कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया। संगोष्ठी ने भारत में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों के संरक्षण, पुनर्कल्पना और पुनर्प्राप्ति के महत्व पर सार्थक संवाद को बढ़ावा देने में मदद की।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया